साधनों का वर्गीकरण
(CLASSIFICATION OF RESOURCES)

विभिन्न विद्वानों ने साधनों का वर्गीकरण विभिन्न प्रकार से किया है। **निकेल** एवं **डॉर्सी** तथा **ग्रॉस** एवं **फ्रैन्डल** ने साधनों को मानवीय तथा अमानवीय दो वर्गों में वर्गीकृत किया है। सन् 1961 में इन्डियाना में फ्रेंच लिक में आयोजित 'Home Economics Seminar' में साधनों को तीन वर्गों सामाजिक साधन, व्यक्तिगत साधन और तकनीकी साधन में विभाजित किया है। अध्ययन में सुविधा की दृष्टि से पारिवारिक साधनों को मुख्य रूप से वर्गों में विभाजित किया जा सकता है—मानवीय साधन और अमानवीय साधन।

I. **मानवीय साधन** (Human Resources)—मानवीय साधन व्यक्ति के भीतर अंतर्निहित गुण होते हैं। इसके अंतर्गत व्यक्ति, परिवार के सदस्यों के जन्मजात तथा अर्जित गुण दोनों ही आते हैं। प्रत्येक व्यक्ति की मानसिक और बौद्धिक क्षमताएँ सीमित होती हैं, किन्तु निरंतर अभ्यास और ज्ञानवृद्धि द्वारा इसे बढ़ाया जा सकता है। परिवार के सदस्यों की रुचियाँ, समय, शक्ति, ज्ञान, कौशल, चातुर्य, अभिवृत्तियाँ आदि प्रमुख मानवीय साधन हैं। मानवीय साधन अमानवीय साधनों की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण एवं मूल्यवान होते हैं, क्योंकि एक योग्य बुद्धिमान व्यक्ति अपने कौशल, बुद्धि, ज्ञान चातुर्य से अमानवीय साधनों को कुछ ही समय में हासिल हो सकता है जबकि आमनवीय साधनों के ढेर से तुरंत ही मानवीय साधन उपलब्ध नहीं हो सकते हैं। प्रमुख मानवीय साधन निम्नांकित हैं—

1. **योग्यता** (Ability)—योग्यता एक महत्वपूर्ण मानवीय साधन है। ईश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति को कुछ-न-कुछ योग्यता देकर ही इस पृथ्वी पर भेजा है। प्रत्येक व्यक्ति किसी--न-किसी काम में प्रवीण और

कुशल होता है चाहे वह शारीरिक कार्य को या मानसिक। निरंतर अभ्यास, कठोर परिश्रम तथा लगन से व्यक्ति अपनी योग्यताओं में वृद्धि कर सकता है। कुछ लोग अति विशिष्ट (Exceptional) होते हैं, जिन्हें प्रकृति ने ही ढेर सारी योग्यता, कौशल तथा बुद्धि देकर ही इस जगत में भेजा है। परंतु ऐसे व्यक्ति बहुत कम ही होते हैं। एक गृहिणी सीमित साधन में स्वादिष्ट और पौष्टिक आहार बनाने में निपुण हो सकती है, घर के काम-काज को समय से निपटाती है जिससे परिवार के सभी सदस्य संतुष्ट रहते हैं और अधिकतम लाभ मिलता है जो उस गृहिणी की कुशलता है जबकि दूसरी गृहिणी जिसके पास पर्याप्त साधन हैं परंतु उसमें कार्यकुशलता तथा बौद्धिक क्षमता का अभाव है तब वह परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाती है। परिणामत: परिवार के सदस्य असंतुष्ट तथा दु:खी रहते हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि परिवार के किसी सदस्य की किसी विशेष कार्य में निपुणता उस परिवार का एक साधन है।

2. **कौशल** (Skills)—ईश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति को कुछ-न-कुछ विशेष कौशल देकर ही इस जगत में भेजा है। लेकिन प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक कार्य में कुशल हो, यह संभव नहीं है। कोई व्यक्ति सिलाई, कढ़ाई, बुनाई कला में निपुण होता है तो कोई पढ़ने-लिखने में, कोई पाक कला में तो कोई गृह सज्जा में। परिवार के जिन सदस्यों को जिस कार्य में रुचि हो उसे अवश्य ही विकसित करने का अवसर देना चाहिए। एक गृहिणी जिसे पाक कला में रुचि है, वह कम खर्च में भी संतुलित, पौष्टिक और स्वादिष्ट व्यंजन बना सकती है। इसी तरह वह व्यक्ति जो बाजार के कामों में दक्ष है, वह कम धन में भी उपयोगी वस्तु खरीद कर परिवार को उपलब्ध करवा सकता है। इस प्रकार व्यक्ति का कौशल परिवार की उन्नति के लिए एक आवश्यक साधन है।

3. **अभिवृत्तियाँ** (Attitudes)—वे भावनाएँ जो किसी कार्य को करने के लिए उत्साहित अथवा निरुत्साहित करती हैं, अभिवृत्तियाँ कहलाती हैं। परिवार के सदस्यों की अभिवृत्तियाँ भी एक महत्वपूर्ण तथा आवश्यक पारिवारिक साधन है। मूल्यों तथा लक्ष्यों से इनका निर्माण होता है। लक्ष्य तक पहुँचने के लिए व्यक्ति और परिवार की अभिवृत्तियों में समय, स्थान एवं परिस्थिति के अनुसार परिवर्तन करना होता है तथा बदलते परिवेश और वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित करना होता है। वे व्यक्ति जो आशावादी होते हैं, वे विषम तथा कठिन परिस्थितियों में भी अनुकूल वातावरण तैयार करके लक्ष्यों की प्राप्ति कर लेते हैं, जबकि निराशावादी व्यक्ति लक्ष्य प्राप्ति में बाधा पहुँचाने वाले तत्वों से जल्दी ही घबराकर अपने पथ से विचलित हो जाते हैं।

4. **शक्ति** (Energy)—परिवार के सदस्यों की शारीरिक तथा मानसिक ऊर्जा भी एक महत्वपूर्ण पारिवारिक साधन है। किसी भी कार्य को संपन्न करने के लिए ऊर्जा की जरूरत होती है, चाहे वह शारीरिक ऊर्जा हो या मानसिक, जैसे—पढ़ना, लिखना, झाड़ू लगाना, पोंछा देना, खाना पकाना, कपड़ा धोना, प्रेस करना, लकड़ी काटना, घर की साफ-सफाई एवं सजावट करना आदि। जिस समय व्यक्ति शारीरिक कार्य नहीं कर रहा होता है तथा पूर्ण रूप से विश्राम की दशा में होता है तब भी शरीर की विभिन्न क्रियाओं को संपन्न करने के लिए ऊर्जा की आवश्यकता होती है। साँस लेना, भोजन पचाना, नींद आना, रक्त परिसंचरण, हृदय का धड़कना आदि इसके उदाहरण हैं।

5. **ज्ञान** (Knowledge)—आजकल बाजार में विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ, उपकरण, भोज्य सामग्री उपलब्ध है। गृहिणी अपने ज्ञान का सर्वोत्तम ढंग से उपयोग करके पारिवारिक लक्ष्यों की प्राप्ति कर सकती है तथा उन्हें संतुष्ट कर सकती है। यदि गृहिणी को इस बात का ज्ञान होगा कि किस मौसम में कौन-कौन से पौष्टिक तत्व उपलब्ध हैं तब वह सीमित धन में भी परिवार के प्रत्येक सदस्य को संतुलित आहार उपलब्ध करवा सकती है। मौसम के अनुरूप परिधान एवं अन्य वस्त्र उपलब्ध करवा सकती है। ज्ञान द्वारा ही उपलब्ध विकल्पों में से श्रेष्ठ विकल्प का चुनाव सर्वोत्तम ढंग से हो सकता है। अज्ञानता के कारण कभी-कभी अधिक समय, शक्ति धन आदि का अपव्यय हो जाता है। इस प्रकार ज्ञान परिवार का एक साधन है।

6. **रुचि** (Interest)—रुचि एक महत्वपूर्ण मानवीय साधन है। इसके होने पर कार्यकुशलता बढ़ जाती है। मन, तन, और धन, तीनों ही एक-दूसरे से घनिष्ठता से जुड़े होते हैं। जब व्यक्ति में कार्य के प्रति रुचि होगी तो वह काम को पूरी लगन से करेगा जिससे उसे निश्चित ही सफलता प्राप्त होगी। बिना रुचि से काम करने पर लक्ष्य की प्राप्ति तो नहीं ही होती है, साथ ही कार्य नीरस, बोझिल, उबाऊ एवं शीघ्र थका देने वाला लगता है। उदाहरण के लिए एक गृहिणी को यदि सिलाई-कढ़ाई, बुनाई या पेंटिंग में रुचि है तब वह व्यस्तम दिनचर्या में से

कुछ समय निकालकर साधारण कपड़े से भी सुंदर परिधान तैयार कर सकती है। जबकि ऐसी गृहिणी जिस सिलाई-कढ़ाई, बुनाई अथवा पेंटिंग में रुचि नहीं है वह पर्याप्त समय मिलने पर भी इन कार्यों को नहीं कर सकेगी।

7. **समय** (Time)—समय काफी महत्वपूर्ण साधन है जिसे किसी भी कीमत पर नकारा नहीं जा सकता। प्रत्येक काम को करने के लिए समय अनिवार्य रूप से चाहिए। समय पर काम होने से ही सफलता मिलती है। प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन 24 घण्टे का ही समय प्राप्त होता है। इतने ही समय में एक गृहिणी प्रत्येक काम को समय से निपटाकर मनोरंजन और विश्राम के लिए भी समय निकाल लेती है जबकि एक अस्त-व्यस्त गृहिणी अपने दैनिक कार्यों को भी नहीं निपटा पाती है। अत: समय का सदुपयोग करना प्रत्येक व्यक्ति को आना चाहिए। बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता। वे व्यक्ति जो समय का महत्व नहीं समझते हैं तथा व्यर्थ ही लड़ाई-झगड़ा करके या गप्पें लड़ाकर समय गँवाते हैं, उन्हें बाद में पछताने के अतिरिक्त कुछ भी शेष नहीं बचता है। कुछ विद्वानों ने समय को अमानवीय साधनों की श्रेणी में रखा है।

II. **अमानवीय साधन** (Non-Human Resources)—अमानवीय अर्थात् भौतिक साधन धन से प्राप्त किए जाते हैं। इन्हें देखा, सूँघा और स्पर्श किया जा सकता है। मकान, स्कूटर, भोज्य सामग्री, वस्त्र, चल-अचल संपत्ति, औजार, बर्तन, उपकरण आदि वस्तुएँ भौतिक साधन के उदाहरण हैं। धन से प्राप्त होने वाली सभी सुविधाएँ यथा—पार्क, बगीचा, अस्पताल, डाक सेवा, स्टेशन, विश्रामालय, पुस्तकालय, रेल व बस सेवाएँ आदि भी अमानवीय साधन ही हैं। भौतिक साधन के अंतर्गत निम्न सेवाएँ मुख्य हैं—

1. **धन** (Money)—धन अत्यधिक महत्वपूर्ण भौतिक साधन है। इसके बिना किसी व्यक्ति, परिवार, समाज या राष्ट्र का उत्थान संभव नहीं है। धन से विश्व की लगभग सभी भौतिक वस्तुएँ या सेवाएँ प्राप्त की जा सकती हैं, भोजन, कपड़ा, आवास, फर्नीचर, स्कूटर, मोटरगाड़ी, उच्च शिक्षा, विदेश यात्रा आदि। धन का विनिमय मूल्य (Exchange Value) होता है।

2. **भौतिक वस्तुएँ** (Things and Articles)—वे सभी भौतिक वस्तुएँ जिन्हें हम सभी रोज ही अपने दैनिक जीवन में उपयोग करते हैं, जैसे—भोज्य सामग्री, किताब, कॉपी, मेज, मकान, कपड़ा, पलंग, बर्तन, औजार, उपकरण आदि। धन के विनिमय द्वारा इन्हें खरीदा तथा बेचा जा सकता है।

3. **सामुदायिक सुविधाएँ** (Community Services)—इसके अंतर्गत वे वस्तुएँ आती हैं जिसके लिए व्यक्ति या परिवार कोई धन नहीं खर्च करता बल्कि समाज का अभिन्न अंग होने के कारण वह इनका उपभोग करता है, जैसे—पार्क, पुस्तकालय, रेलगाड़ी, अस्पताल, स्कूल, यातायात, डाक सेवा, पुलिस, रेलवे स्टेशन, महाविद्यालय, सड़क आदि। इन सेवाओं को प्राप्त करने हेतु व्यक्ति या परिवार को सरकारी, अर्द्ध-सरकारी या निजी संस्थानों को कुछ निर्धारित शुल्क भी चुकाना पड़ता है।

4. **समय तथा ऊर्जा** (Time and Energy)—कुछ विद्वान समय तथा ऊर्जा को मानवीय साधन न मानकर, इन्हें भौतिक साधनों के अंतर्गत शामिल करते हैं। कुछ विद्वानों ने समय तथा ऊर्जा को मानवीय साधन माना है। जब व्यक्ति स्वयं अपनी ऊर्जा तथा समय का सदुपयोग कर किसी कार्य को करते हैं तथा लक्ष्य तक पहुँचते हैं, तब यह मानवीय साधन कहलाते हैं। परंतु जब धन खर्च करके इसे किसी अन्य व्यक्ति से काम करवाते हैं अथवा समय-शक्ति बचत के उपकरणों का उपयोग करते हैं तब यह भौतिक साधन कहलाता है।